## अध्याय : 5

## रघुवीर सहाय : व्यंग्य कवि

## अध्याय : 5

## रघुवीर सहाय : व्यंग्य कवि

### व्यंग्यशीलता प्रमुख विशेषता

रघुवीर सहाय के काव्य की प्रमुख विशेषता व्यंग्यशीलता है। उनका व्यंग्य पैना और धारदार है। उसमें भीतर तक छीलते रहने की क्षमता है। हिन्दी के नए एवं प्रगतिशील कवियों में व्यंग्य का सफल प्रयोग रघुवीर सहायजी ने किया है।

रघुवीर सहाय तीखी और सीधी चोट करनेवाले व्यंग्यकार है। उनका व्यंग्य समाज पर, व्यक्ति पर, नेताओं की आदतों, मुद्राओं, झूठे भाषणों व्यर्थ के कर्मकाण्डों पर हैं। समाज के अनेक दोष उन्होंने व्यंग्य के सहारे उजागर किये हैं।

रघुवीर सहायजी की जितनी भी व्यंग्य प्रधान रचनाएँ हैं उसमें उन्होंने व्यर्थ कर्मकाण्ड, झूठे भाषण, नेताओं की आदतें आदि पर तीखे व्यंग्य किए हैं।

"हँसो हँसो जल्दी हँसो", "बडा हो रहा है", "पानी-पानी", "दो अर्थ का भय" आदि कविताओं का नाम व्यंग्य की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

"दो अर्थ का भय" कविता में कवि ने पुलिस की प्रवृत्ति पर तथा राजा का जनता के साथ जो व्यवहार होता है उस पर तीखा व्यंग्य किया है। कवि कहता हैं कि एक शब्द के दो अर्थ होते हैं और जो शब्द राजा या पुलिस सुनते नहीं उसीके कारण जनता का शोषण होता है तथा जनता पर अन्याय किए जाते हैं। इसके बारे में कवि कहता हैं -

"मैं सब जानता हूँ पर बोलता नहीं
मेरा डर मेरा सच एक आश्चर्य है
पुलिस के दिमाग में वह रहस्य रहने दो
वे मेरे शब्दों की ताक में बैठे हैं
जहाँ सुना नहीं उनका गलत अर्थ लिया और मुझे मारा।"[1]

"पानी-पानी" कविता के माध्यम से कवि रघुवीर सहाय ने बच्चों को व्यंग्य का शिकार बनाया है। उनका सामाजिक व्यंग्य कई रूप में उभरा है। कवि इस कविता के माध्यम से व्यंग्य करता है कि आज के समाज में जो गरीब लोग हैं उनके बच्चे पानी की बूँद के लिए तडप रहे हैं। हमारा देश आज़ाद हो जाने के बाद भी न पानी मिल रहा है न रोटी। अपने ही देश में अपने देश के बच्चे पानी और रोटी के लिए लाचार हो गए हैं। रघुवीरजी कहते हैं -

"बरसों पानी को तरसाया
जीवन से लाचार किया
बरसों जनता की गंगा पर
तुमने अत्याचार किया।
धरती के बाहर का पानी
हमको बाहर लाने दो
अपनी धरती अपना पानी
अपनी रोटी खाने दो।"[2]

## रघुवीर सहाय के व्यंग्य-काव्य की सीमाएँ

रघुवीरजी की व्यंग्य-परक कविताओं में व्यक्ति के स्वभाव को लेकर व्यक्ति की बड़ी समस्याओं को भी सम्मिलित किया है। किन्तु एक तथ्य यह भी उभरता है कि कवि ने जिस व्यंग्य का सहारा लिया है, वह एक सत ही बनकर ही रह गया है।

रघुवीरजी का व्यंग्य उनका शास्त्र है और समाज लक्ष्य। उनकी कविताएँ साधारण बोल-चाल से युक्त है। उनकी कविताओं में समाज के प्रति कम अपने प्रति संवेदना का भाव व्यापक है।

"वह जवानी में बहुत कष्ट उठा चुकी है
अब वह थोडे-थोडे लगातार स्नेह के बदले
एक पुरूष के आगे झुक कर चलने को तैयार हो चुकी है
वह कुछ निर्दय पुरूषों को जानती है जिन्हें
उसका पति जानता है
और उसे विश्वास है कि उनसे वह पति के ही कारण
सुरक्षित है
वह हाथ रोककर एकटक देखती है हाय
फिर पहले से धीमे कंघी को बालों में फेर ले
जाती है उनके
सिरे तक।"[3]

नयी कविता में सुंदर और असुंदर, आकर्षण और अनाकर्षक सभी तत्वों का अंतर्भाव है। वह पुरानी रीति पर कभी मुग्ध नहीं हो सकती है। पुरानी रीति यह है कि मानव की विशेषता उसकी भूख, उसकी मनोरूग्णता और मृत्यु को भी रेशमी आवरण में प्रस्तुत किया जाए, ताकि उसकी असलियत दुनिया की नजरों से छिपी रहे। दूसरे लोग यह न जाने की कही कुछ अप्रिय अवांछित और अयाचित घटित हुआ है। और इसके लिए पूरी जिम्मेदारी आदर्श के कटघरों में घिरे समाज पर हैं। रघुवीरजी ने इसी पर व्यंग्य प्रस्तुत किया है -

"उसे रोने से हमें जाननी थी एक पूरी कथा
उसके बचपन से जवानी तक की कथी।"[4]

## नई कविता में लोकतन्त्र का आधार व्यंग्य

नयी कविता में भी लोकतन्त्र का आधार लिया गया है। नयी कविताओं में भी समाज की तस्वीर, व्यक्ति का अधुरापन व्यक्त हुआ है। नयी कविताओं में व्यापक व्यंग्य की अभिव्यक्ति हो गयी है। मशीनी सभ्यता के उपर समाज के घिनौने चित्र और मानव की विवशता का चित्रण भी मिलता है। उसके साथ मानव के झूठेपन, धोखेबाजी का भी व्यंग्य का सहारा लेकर पर्दाफाश करने का प्रयत्न किया है।

नयी कविता के रचनाकारों ने युद्ध, बेकारी, राजनीति, अशिक्षा जैसी विषय वस्तु पर व्यंग्य के माध्यम से तीखा प्रहार किया है। दुष्यंतकुमार, भवानीप्रसाद, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, अज्ञेय, रघुवीर सहायजी में पूरी सफलता के साथ व्यंग्य व्यक्त हुआ है।

औरत की असलियत बताते वक्त रघुवीरजी का व्यंग्य अनायस ही कुछ कह जाता है जो एक औरत का दर्दनाक चित्रण है -

"जब वह घुटने मोड़कर
करवट लेती हो
तब देखोगे कि तुम
देख रहे हो कि
उस पर अन्याय होंगे ही।"[5]

## राजनीतिक व्यंग्य

नयी कविता में व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं विशिष्ठता की भावना प्रबल है। नयी कविता में कवियों ने अपने व्यंग्यों का लक्ष ज्यादा से ज्यादा समाज को बनाया है। राजनीतिक प्रचार से कला को बचाना अच्छा है, राजनीतिक दबाव का विरोध करना जनतांत्रिक समाज व्यवस्था में न्यायय है किंतु जन-जीवन से तटस्थ रहना आज की कला के लिए क्षम्य नहीं है। नयी कविता आज समाज में इसीलिए

आहत नहीं हो रही है।

"वह कौन था" कविता के आधार पर रघुवीर सहायजी ने नेता (मंत्री) के व्यवहार पर व्यंग्य प्रहार करते हुए लिखा है -

"एक मंत्री भीड के बीच खोया सा सहसा मिल गया मुझे
देखते ही बोला - अच्छे हो।
मैंने कहा - हुजूर ने पहचाना ।
तब कहने लगा जैसे यही पहचान हो
तुम अभी संकट से मुक्त नहीं हुए हो
फिर जैसे शक हो गया कि भूल की -
क्षण भर घूरा मुझे
बोला - कल मेरे पास आना तब बाकी बताउंगा।"[6]

नई कविता राजनीति और समाज के चित्रण में किसी पार्टी विशेष का रुख नहीं रखती और न उससे प्रेरित ही होती है। पर अपने परिवेश के प्रति उसका दृष्टिकोन सजग है। इस सजगता में उसे राजनीति का घिनौनापन और समाज का पिछड़ापन मिल सकता है और इसके विपरित स्थिति भी आ सकती है।

रघुवीर, भारत भूषण, सर्वेश्वर आदि कवियों ने युगीन परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण करते हुए सशक्त व्यंग्य के माध्यम से एक चुभने वाली भाव गरिमा का संयोजन किया है। "आप की हँसी", "संस्कृत" कविताओं में व्यंग्य को प्रस्तुत किया है -

"आप की हँसी" का उदाहरण प्रस्तुत है -

"निर्धन जनता का शोषण है
कह कर आप हँसे
लोकतंत्र का अंतिम क्षण है
कह कर आप हँसे

सबके सब है भ्रष्टाचारी
कह कर आप हँसे
कितने आप सुरक्षित होंगे
मैं सोचने लगा
सहसा मुझे अकेला पाकर
फिर से आप हँसे।"[7]

"संस्कृत" कविता में रघुवीर सहायजी ने बड़ी अच्छी तरह का व्यंग्य किया है। जो लोग हिन्दी बोलते हैं उन्हें बाँधकर मारा था। और वहाँ ही शास्त्रीय गुणगान करने के लिए वयोवृद्ध संस्कृतज्ञ इकट्ठा हो गए थे समझौता करने के लिए। इस कविता का उदा·व्यंग्य के सहारे देखिए -

"उसी आम के नीचे बाँधकर मारा था
उन्होंने अठारह बरस के उन लड़कों को
हिन्दी बोलने वाले गाँव के लड़कों को
जो सेना को नहीं माने थे
उसी आम के नीचे आम के वृक्ष का
शास्त्रीय गुणगान करने आए थे
वयोवृध्द संस्कृतज्ञ।"[8]

व्यंग्यपरक कविताओं में भी भारत प्रजातंत्र में जो बात कहने की स्वतंत्रता है वह सबसे अधिक मूर्तित हुई है। शासन व्यवस्था मानव कल्याण की घोषणा करते हुए मानव विवेक पर ही पहला प्रहार करती है। वह अपनी मेधा एवं अपने उद्योग का उपयोग किन्हीं अदृश्य संकेतों से मानव-विनाश हेतु करता है। उसे इस बात की भी स्वतंत्रता नहीं कि वह स्वेच्छा से सत्यं-शिवं-सुंदरम् का अन्वेषण कर सके। उसका जो स्वप्न है वह भी पूरा नहीं होता। रघुवीरजी इस विरोधाभास को "काबुल स्वप्न" कविता में निम्न रूप से प्रस्तुत करता है -

"मुझे याद आने लगा अपना घर
जहाँ मेरा बचपन बीता था
सब पुरखे जो कि मर चुके थे
मैंने जिंदा देखें
वे चकित थे कि "मैं"
क्यों काबुल गया क्रांति करने।"[9]

राजनीति को मोड़ना, बदलना उन्हीं हाथों में रह गया था। लोग भी उनकी तरह व्यवहार करने लगे हैं। लोग अपनी शिकायतें सड़क तक लेकर आने लगे हैं। लोगों को न मरने का डर है न जल्दी चलने का। लोगों में भाईचारा का कोई स्थान नहीं रहा। लोग इक-दूसरे के प्रति प्यार की भावना नहीं रखते। इस भावना को प्रस्तुत करते वक्त रघुवीर सहायजी "सडक पर रपट" कविता में लिखते हैं -

"मैंने इस वर्ष देखे एक खास किस्म के नौजवान
रंगेचुंगे चुस्त
उठाकर अंगूठा रोकते हुए मोटार
सवारी का हक भाईचाराना माँगते।"[10]

आज सब सिद्धान्त बदल गए हैं सिपाही भी अपनी वर्दी नहीं पहनते। राजनीति के दुरूपयोग पर व्यंग्य करते हुए कवि कह उठा -

"सूरक्षा अधिकारी सेनाधिपति के
घूर कर देखते है मेरा चेहरा
बहुत दिनों से उन्होंने नहीं देखा है मेरा चेहरा
धीरे-धीरे कम होती गयी है मेरी और
सेनाधिपति की
बातचित

इसलिए मैं सिपाहियों के निगाह में अजनबी
हो गया हूँ।"[11]

रघुवीर सहायजी कहते हैं कि हमारे देश पर हम सब का पूरा अधिकार है। हर एक को आज़ादी मिलनी चाहिए। लोग प्रधामंत्री होने के बात पर जब हँसते हैं तो उनके उत्तर में "अधिकार हमारा है" इस कविता के माध्यम से उनका उत्तर है -

"भारत के कोई कोने में
मरकर बेमौत जनम लेकर
भारत के कोई कोने में
खोजता रहूंगा वह औरत
काली नाटी सुंदर प्यारी
जो होगी मेरी महतारी।"[12]

रघुवीरजी की कविता आज़ादी का ठिकाना खोजती है। तानाशाही और शक्तियों से लोहा लेने के लिए संगठित होकर शक्ति का उद्‌घोष बड़ा करारा व्यंग्य के साथ किया है -

"आज यह कफ़न ढके चेहरे हैं एक साथ रहने के
बचेखुचे कुछ प्रमाण और इन्हें जो याद रख नहीं सकते हैं
वे ही समाज पर राज कर रहे हैं
चेहरे के बिना लोग
कल किसी और बड़े देश के गुलाम हो जायेंगे।
हम अपने देश के उजाड़ो में खोजते रहेंगे अपना चेहरा
- आज़ादी।"[13]

रघुवीर सहायजी ने पुलिस के माध्यम से विकृतियाँ विसंगतियाँ और विषमता को भी रेखांकित किया है। आदमी के बोने व्यक्तित्व की विडंबना व्यक्त करते हुए

कवि कहते हैं -

"आँखे फाडे सुकुल यह रहस्य देखता
उत्तर दक्षिण के 36 भये देवता
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस भारत की एकता।"[14]

आज की जीवन की विसंगतियाँ और जटिलताओं को कभी शांति की समस्या तो कभी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में उभरता है। आज जनता जाँति या धर्म के नाम पर ही नेता लोगों पर विश्वास करती है और ऐसे अनेक सवाल हैं, जिसका जवाब लिडर लोगों को भी देना नहीं आता। इस पर तीखा व्यंग्य करते हुए कहा है -

"मैंने कहा : जिंदाबाद
दल के दल लोग बोले : जिंदाबाद
बोले - कार्यक्रम क्या है ?
मैंने कहा : डर और हिम्मत
बोले : नीति क्या है ?
मैंने कहा : खोज ?
बोले : नीति किसकी है ?
मैंने कहा : क्या ?
बोले : नहीं किस विचारक की
मैंने कहा : क्या ?
बोले : यदि तुम्हें नहीं पता कि तुम विश्व के राष्ट्रों में
किसके समर्थक हो
तो तुम पर बाराबंकी की जनता विश्वास ही
क्यों करे ?"[15]

समाज के मूल्य इतने बदल गए हैं कि औरत अपने पति के साथ ठीक तरह से नहीं रहती। फिल्मों में भी उसी प्रकार का चित्र दिखाया जाता है। जो कल की लड़कियाँ है वह भी अपने पति से बदला लेने के लिए छोकरों के नंगे पीठ पर नाच कर रही है। और जो लोग फिल्म देखने आये हैं वह सिर्फ फिल्म ही नहीं देखते तो परदें के भीतर भी झाँकना चाहते हैं, रघुवीर सहाय इसके बारे में लिखते हैं -

"फेंककर मारे आपस में लोगों ने ताजे अंडों के
सजे फूल
रंगबिरंगे जूठन के सागर पर तैर आयी बोतलें
एक बूंद बदन की बू अपने में बंद किए
चुम्मों के बीच चुइंगगम चुभलाती हुई गोरी
गुलाम
गरदने फिल्म के भीतर से देखती हुई जाती
है परदे के
भीतर।"[16]

इन्सान का जीवन प्यार पर निर्भर है। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में कितनी बार युद्ध किया परंतु जब उसे वोट पडा तब मुल्क नहीं रहा। हर जगह सूबेदार और सुबा होने के कारण अब उसके पास कुछ नहीं इस पर करारा व्यंग्य इस प्रकार -

"अब बचा महबूबा पर महबूबा था कैसे
लिखूँ।"[17]

राजनीति में जो नेता लोग हैं वह देश की भोली जनता को बार-बार ठगाने का प्रयत्न करते हैं। वह तो कुछ भी नहीं करते सिर्फ लोगों को आश्वासन देकर लोगों को फसाने का काम करते हैं ऐसे नेता लोगों पर व्यंग्य करते हुए कवि लिखते हैं -

"हमनें बहुत किया है
जनता ने नहीं किया है
हमने बहुत किया है
हम फिर से बहुत करेंगे
हमने बहुत किया है
पर अब हम नहीं करेंगे।"[18]

रघुवीर सहायजी ने दिल्ली की विषमता का चित्रण "आमार सोनार दिल्ली" कविता में किया है। कवि का कहना है एक तरफ दिल्ली सज धजकर खड़ी है। दूसरी तरफ गरीब लोग अपने पेट के लिए, जिंदगी जीने के लिए जीवन से संघर्ष कर रहे हैं। एक तरफ मक्खन, जैसे चीजों को विज्ञापन में स्थान दिया जाता है परंतु जो गरीब लड़की है उस पर किसी का ध्यान नहीं जाता तब कवि व्यंग्य करते हुए कहते हैं -

"जो लड़की वह खड़ी है कमजोर
साँस लेती भारी बस्ता लिए
काले पाँवों ठिठक कर
क्या तुम उसके सिर पर लदी
उसके माँ-बाप की तरसती
जिंदगी देख सकते हो
एक क्षण में।"[19]

आज हमारे समाज में जिसने कुछ किया नहीं है उसे सजा मिलती है और कानून सबूद माँगता है। आज सामान्य लोगों का जीवन भयानक बन गया है। इन्सान इक-दूसरे के साथ प्यार नहीं करता। मानवता का जैसे कोई मूल्य नहीं रहा और जो करता है उसे सजा मिलने के बजाय दूसरा ही सजा भुगतता है। इसपर व्यंग्य करते हुए, रघुवीर सहाय कहते हैं -

"मेरा कोई निर्णय नहीं हो सका
इससे कोई परेशान नहीं था
कोई एक निर्णय नहीं हो सका
इससे कोई परेशान नहीं था
उनके पास मेरी दो संताने कैद थी
(वे भी नहीं जानते थे कि एक कहाँ गयी)[20]

सामाजिक व्यंग्य

नया कवि जिस सामाजिक विषाद का शिकार है उसी विषाद ने उसे व्यंग्य की शक्ति दी है। समाज की विविध बुराइयों पर वह व्यंग्य प्रहार करता है। जब मामुली व्यक्ति बडा हो जाता है तब बड़े-बड़े लोग उसे मारने पर तुले हो जाते हैं। गरीब गरीब ही और अमीर अमीर ही होता जा रहा है। इस प्रवृत्ति पर आघात करते हुए कवि कहता है -

"जिन्होंने मुझसे जादा झेला है
वे कह सकते हैं कि भाषा की जरूरत नहीं होती
साहस की होती है
फिर भी बिना बतलाये की एक मामूली व्यक्ति
एकाएक कितना विशाल हो जाता है
कि बड़े-बड़े लोग उसे मारने कर तुल जायें
रहा नहीं जा सकता।"[21]

सामाजिक चेतना से संयुक्त होकर जो कविताएँ लिखी हैं उसमें रघुवीर सहायजी का वास्तविक रूप उजागर होता है। रघुवीरजी के काव्य की मुख्य प्रवृत्तियों में निम्न एवं मध्य वर्ग की स्थितियाँ, अनुभूतियों की मार्मिक अभिव्यक्ति, असहायता एवं परिचित प्रतिकों का विधान, सहज कल्पना आदि को विशेष ग्रहण किया जा सकता है। व्यंग्यात्मकता की दृष्टि से "पानी पानी" को लिया जा सकता है। उसमें उन्होंने

आज़ाद देश के बच्चों की भूख तथा प्यास की विवशता को यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया है -

"हमको अक्षर नहीं दिया है
हमको पानी नहीं दिया
पानी नहीं दिया तो समझो
हमको बानी नहीं दिया।"[22]

समाज और संसार में इतने दोष है कि जो स्पष्ट दिखायी देते हैं। रघुवीर सहायजी की दृष्टि उन दोषों पर पड़े बिना नहीं रहती। उन्हें जो दोष दिखायी दिये उस पर व्यंग्य करके समाज के सामने असली रूप लाने का उनका प्रयास है। व्यंग्य का सहारा लेकर सिर्फ दोष दिखाने का प्रयत्न ही रघुवीरजी ने नहीं किया तो उसके साथ लोकमंगल भावना को भी प्रस्तुत करने का उनका प्रयास है -

"वह सब को एक सी नहीं आती
न सब मृत्यु के बाद एक हो जाते हैं
वैसे ही जैसे पहले नहीं थे।"[23]

आज़ादी के बाद न भारतीय जनता को संतोष मिला न औरतों को। नारी पर तो आज भी अनेक प्रकार के अन्याय किये जाते हैं। नारी आज भी भेड़-बकरी की जिंदगी जी रही है। नारी की अवस्था को प्रस्तुत करते वक्त "औरत की जिंदगी" कविता में रघुवीर सहाय ने लिखा है -

"कई कोठरियाँ थी कतार में
उनमें किसी में एक औरत ले जायी गयी
थोडी देर बाद उसका रोना सुनाई दिया।"[24]

इन्सान का जीवन खोखलामय बन गया है। कवि कहता है विवशता, भूख, मृत्यु सब सजाने के बाद ही पहचानी जा सकती है। वह विवशता, भूख,

मृत्यु के कोरे सौंदर्य के साथ न जोड़कर उसे सामाजिक यथार्थ में देखता है। जीवन के संदर्भों का आकलन करना चाहता है। इस प्रकार उनका सूक्ष्म व्यंग्य देखिए -

"मैंने कहा डपट कर
ये सेब दागी है
नहीं-नहीं साहब जी
उसने कहा होता
आप निश्चित रहें
तभी उसे खाँसी का दौरा पड गया
उसका सीना थामे खाँसी यही कहने लगी।"[25]

रघुवीरजी की कविताएँ वक्तव्यों से निर्मित हुई है। उसके साथ उसकी भावना जुड़ी हुई है। "बचे रहो" कविता इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। इस कविता में भूख के कारण मरने वाले लोगों का दर्दनाक चित्रण है। इस बात का कविता में व्यंग्य इस प्रकार है -

"हजार कई हजार हजारों मर गए भूख से
- ऐसा कहा
इतनी बडी संख्या बतायी कि उतनी बडी
आड हो गयी।"[26]

हमारे समाज में आज भी औरतों का शोषण किया जाता है। औरतों की ओर ज्यादा ध्यान या प्यार का व्यवहार नहीं किया जाता। आज समाज में जो खोखलापन है उसका चित्रण करते हुए रघुवीरजी व्यंग्य के साथ कहते हैं -

"उस दिन बुढ़िया बीमार पडी
मर्दों ने कहा औरतों की बीमारी है
वह बुढिया औरत के रहस्य -
उन बीस जनों के औरतपन - की कठरी बन

कोने में खटिया पर जा करके पहुड रही
वह पहुडी रही साल भर तक फिर गुजर गयी
औरतें उठी घर धोया मर्द गये बाहर
अर्थी लेकर।"[27]

आज समाज के साथ रहना है तो समाज का जिस प्रकार का व्यवहार है उसी प्रकार का व्यवहार करना चाहिए। इन्सान एक-दूसरे पर शक करता है और वह बेमौत मारा जाता है।

"फिर मुझे मारकर सनीचर ने
रास्ते से लगा दिया सा है
आज दिन भर के बाद लगता है
काम दिनभर में कुछ किया सा है
मुझको भी साथ उठा ले चलिए
देखिए मैंने कुछ पिया सा है
पहले गिन लूँ तभी बताऊंगा
आपसे मैंने क्या लिया सा है।"[28]

आज के समाज में व्याप्त बनावटी सभ्यता पर तीखा व्यंग्य किया है। उसके साथ जो लोग कानून के रखवाले हैं। वह अपना फर्ज पूरी तरह से नहीं निभा रहे हैं। और जो निरपराध लोग हैं उन्हें तकलीफ देने का प्रयत्न होता है। इस बात पर व्यंग्य करते हुए रघुवीर सहायजी ने कहा है -

"भीड़ ठेलकर लौट गया वह
मरा पडा है रामदास यह
देखो देखो बार बार कह
लोग निडर उस जगह खडे रह
लगे बुलाने उन्हें जिन्हें संशय था हत्या होगी।"[29]

आजकल समाज में अनाडी लोगों को शिक्षित बनाने का एक रोग बढ़ गया है। यह केवल दिखावा है। असल में उनकी रोटी, कपडा और मकान की समस्या हल करने के अलावा हजारों करोडों रूपयें नष्ट किये जाते हैं परन्तु लोगों को कपड़े तक अपने शरीर को ढँकने के लिए नहीं मिलते हैं। इस पर रघुवीरजी ने लिखा है -

"मैंने जमा की
नौ जवान
या दस बेबस लडकियाँ
और उन्हें चिपके कपड़े पहना दिये
फिर मैं रोया उनके स्तनों की असली
शक्ल देखकर।"[30]

समाज में अनेक ऐसे पिता है जो बच्चे होते हुए भी लावारिस की जिंदगी जी रहे हैं। उनके आँसू पोंछने के बजाय, उनकी मदद करने के बजाय उनके सिर्फ अधूरे काम पूरे करने का प्रयत्न किया है -

"खैराती अस्पताल
बूढा बीमार है
पास में छोटे-छोटे
पुत्र चार-पाच है
पुत्र जानते नहीं
पिता मर रहा है।"[31]

समाज में गरीब लोगों की अवस्था दयनीय होती जा रही है। भूख के कारण अनेक लोग एक ही परिवार के मर रहे हैं और घर का जो प्रमुख व्यक्ति है वह हताश होकर बैठा है उसे भी जीवन के प्रति नफरत निर्माण हो गयी है वह अपने बच्चे का पेट ठीक तरह से नहीं भर सकता। समाज का यह भयानक चित्रण रघुवीर सहाय ने प्रस्तुत किया है -

"फिर कुछ आशा से बतलाने लगा कि
साहब इसकी माँ
गुजर गयी है इसके दो भाई भी मैंने
दिये गवाँ।"[32]

आधुनिक सभ्यता पर व्यंग्य

रघुवीर सहाय ने बहुत सी व्यंग्यपरक कविताओं में व्यक्ति के स्वभाव को लेकर संसार की बडी समस्याओं तक सम्मिलित है। कुछ रचनाएँ आधुनिक सभ्यता के दोषों पर हैं, जिनमें यह सिध्द किया गया है कि मनुष्य की आत्मा मर गयी है, चारों ओर ढोंगें का बोलबाला है। जीवन के हर क्षेत्र में आदमी की होनेवाली विडम्बना से कवि का हृदय व्याकुल हो जाता है। संवेदनशील कवि इस बात को स्पष्ट करना चाहता है।

"उसी रोने से हमें जाननी थी एक पूरी कथा
उसके बचपन से जवानी तक की कथा।"[33]

आधुनिक युग में लोग लाश बन जाने के बाद ही चुप रह जाते हैं और यह आज शोध का विषय बनता है। "आज का पाठ है" इस कविता में रघुवीरजी ने करारा व्यंग्य कस लिया है -

"लाश वह चीज है जो संघर्ष के बाद बच रहती है
उसमें सहजी हुई रहती है, एक पिचकी थाली
एक चीकट कंघी और देह के अन्दर की टूट
सिर्फ एक चीख बाहर आती है जो कि दरअसल
एक अन्दरूनी मामला है और अभी शोध का
विषय है।"[34]

जीवन के हर क्षेत्र में आदमी की होनेवाली विडंबना से कवि हृदय व्याकुल होता है। वह आने वाले खतरे की सूचना देता है पर कोई नहीं सूनता। अतः कवि कह उठा है -

"इस लज्जित और पराजित युग में
कहीं से ले आओ वह दिमाग
जो खुशामद आदतन नहीं करता।"[35]

आज का जीवन जैसे एक खेल बन गया है। हर एक अपने समय से आता है। अपने तर्कों से जीता है। जैसे जीवन खेल हो गया है। इस पर कवि का संवेदनशील हृदय तिल-तिला उठा -

"एक दिन
मेरे अपने जीवन में ही खत्म होने वाला
है यह खेल
इस घर की दीवार पर मेरी तसवीर होगी
बच्चे आयेंगे पर मेरी कल्पना में नहीं-अपने
समय से आयेंगे
और उनकी बोली में उनका तर्क नहीं होगा
जिसको आज सुनता हूँ।"[36]

आज समाज में इन्सानियत जिंदा नहीं रही। हर एक देखकर चूप रह जाता है। कवि ने इस पर करारा व्यंग्य किया है। "सड़क पर रपट" कविता में कवि कहता है -

"उन लड़कों का यहाँ जिक्र तक नहीं किया गया
जो इन्हें देखकर खून का घूँट पीकर रह जाते हैं
क्योंकि उनमें से कोई दुर्घटना में शामिल नहीं हुआ।"[34]

भ्रष्टाचार पर व्यंग्य

रघुवीर सहायजी ने सामाजिक चेतना को कविता का विषय बनाया है। उसे अपनी छटा देकर पाठकों तक संप्रेषित करने का प्रयत्न किया है। नेताओं के झूठे आश्वासन, शोषण का चक्र, झूठी लिडरशीप को उजागर करती हुई निम्नलिखित उक्ति दृष्टव्य है। जिसे कवि ने व्यंग्य का सहारा देकर मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है -

"वे उधर से इधर आ करके मरते थे
या इधर से उधर जा करके मरते थे
यह बहस हम राजधानी में करते थे।"[38]

"राष्ट्रीय प्रतिज्ञा" कविता में कवि ने देश के नेताओं के झूठे आश्वासन पर व्यंग्य किया है वह सिर्फ लोगों को ठगाने का प्रयत्न करते हैं। उस पर कवि ने लिखा है -

"हमने बहुत किया है
हम ही कर सकते हैं
हमने बहुत किया है
पर अभी और करना है।"[39]

परामर्श

रघुवीर सहायजी ने अपने व्यंग्य में राजनीतिक नेताओं पर, सामाजिक तथा धार्मिक रूढ़ियों पर, झूठी लिडरशीप पर, धोखेबाजी पर, शैतानों पर और नारी पराधीनता पर तीखे व्यंग्य प्रस्तुत किए हैं। रघुवीरजी ने अपने व्यंग्य का लक्ष्य समाज को बनाया है। अपनी काव्यप्रतिभा से उन्होंने अपने व्यंग्य को प्रस्तुत किया है। उनमें राजनीतिक, भ्रष्टाचार, आधुनिक सभ्यता पर व्यंग्य अधिक मात्रा में आए हैं। रघुवीरजी ने अपने व्यंग्य के माध्यम से तीखे दृष्टिकोन का परिचय दिया है।

व्यक्ति के स्वभाव को लेकर समाज की बड़ी-से-बड़ी समस्या पर रघुवीर सहायजी ने बड़ी कुशलता के साथ व्यंग्य किये हैं। विविध प्रकार के व्यंग्य कवि के दर्शन दिखाने का मेरा यह अल्पसा प्रयत्न है।

## संदर्भ-सूची


1· हँसो हँसो जल्दी हँसो - रघुवीर सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23 दरियागंज नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1967, पृ·4

2· वही, पृ·6

3· वही, पृ·13

4· वही, पृ·12

5· लोग भूल गए हैं - रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन प्रा·लि·,1-बी,नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1982, पृ·42

6· हँसो हँसो जल्दी हँसो - रघुवीरसहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23 दरियागंज, नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1967, पृ·4

7· वही, पृ·16

8· वही, पृ·17

9· वही,पृ·21

10· वही, पृ·31

11· वही, पृ·35

12· वही, पृ·36

13· लोग भूल गये हैं - रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन प्रा·लि·,1-बी,नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1982, पृ·102

14· हँसो हँसो जल्दी हँसो - रघुवीर सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23, दरियागंज नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1967, पृ·37

15· वही, पृ·38

16· वही, पृ·48

17· वही, पृ·56

18· वही, पृ·57

19· वही, पृ·62

20· वही, पृ·74

21· वही, पृ·4

22· वही, पृ·6

23· वही, पृ·7

24· वही, पृ·12

25· वही, पृ·14

26· वही, पृ·18

27· वही, पृ·22

28· आत्महत्या के विरूद्ध - रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन प्रा·लि·,8,नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1967, पृ·64

29· हँसो हँसो जल्दी हँसो - रघुवीर सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1967, पृ·28

30· वही, पृ·43

31· वही, पृ·52

32· वही, पृ·55

33· वही, पृ·12

34· वही, पृ·7

35· वही, पृ·70

36· वही, पृ·2

37· हँसो हँसो जल्दी हँसो - रघुवीर सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23,दरियागंज नई दिल्ली-110 002, प्र·सं·1967, पृ·32

38· वही, पृ·33

39· वही, पृ·57